# द्रव्यसंग्रह

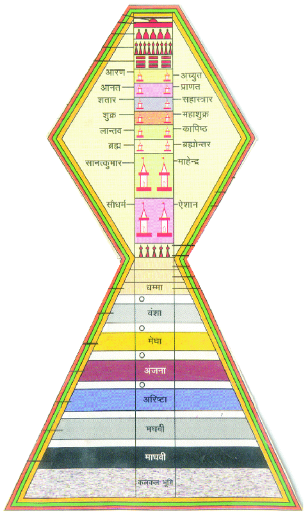


: अन्वयार्थ एवं भावार्थ :-

प.पू. राष्ट्रसंत, गणाचार्य, युगप्रमुख श्रमणाचार्य,

**श्री108 डॉ. विरागसागरजी महाराज**

-: प्रकाशक :-

**श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ**

जैन कीर्तिस्तम्भ, बस स्टैण्ड रोड, भिण्ड (म.प्र.)

प्रसंग : परम पूज्य युगप्रमुख श्रमणाचार्य, राष्ट्रसंत, गणाचार्य श्री 108 डॉ. विरागसागरजी महाराज के राष्ट्रीय रजत आचार्य पदारोहण महोत्सव-वर्ष 2016 के सुअवसर पर

कृति : द्रव्यसंग्रह

अन्वार्थ एवं
भावार्थ : परम पूज्य युगप्रगुख श्रमणाचार्य, राष्ट्रसंत, गणाचार्य श्री 108 डॉ. विरागसागरजी महाराज

संस्करण : प्रथम 2016, भीण्ड (म.प्र.)

प्रतियाँ : 1000

पुण्यार्जक : अरुणा जैन-स्व. कमलेश जैन
अनय, विजय

मूल्य : 20.00

प्राप्ति स्थान :
1. श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ चैत्यालय मंदिर, बताशा बाजार, भिण्ड (म.प्र.) संपर्कसूत्र-पं. वीरेन्द्र जैन, मो. 9754803220
2. आचार्य श्री विरागसागर विद्यापीठ (बी.एड. कॉलेज)
पुष्प विहार कॉलौनी, बीना- 470113, जिला- सागर (म.प्र.)
मो 9425135816
3. विराग फाउण्डेशन
सी/ओ, श्री अरुण कोटडिया, 11-ए. विक्रम नगर सोसायटी, उस्मानपुरा, अहमदाबाद- 380013 (गुज.)
मो 9825900124
4. श्री भूपेन्द्र शांतिलाल शाह
13, वृंदावन सोसायटी, डेरी रोड, मेहसाना-2 (गुज.)
मो 9898494914, 9829452020
5. विराग महिला मंच, बोरीवली, मुंबई (महा.)
6. पुष्पा जी, जयपुर (राज.)
7. तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर
8. पंकज जैन, विराग युवा मंच, इन्दौर (म.प्र.)

मुद्रक : तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर मो. 9314962474/75

# जीवन की महत्त्वपूर्ण झांकियाँ
# परम पूज्य गणाचार्य 108 श्री विरागसागरजी महाराज

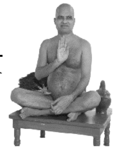

पूर्व नाम : अरविन्द जैन (टिन्नू)
जन्म : 2 मई, 1963, गुरुवार
(वैशाख शुक्ला 9, संवत् 2020, पथरिया)
माता-पिता : श्रीमती श्यामादेवी जैन
(समाधिस्थ पू. श्रमणी आर्यिका विशांतश्री माताजी)
ब्र.श्री कपूरचन्दजी जैन
(संघस्थ पू.क्षुल्लक श्री 105 विश्ववंद्य सागर जी महाराज)
बहिन : श्रीमती मीना जैन, श्रीमती विमला जैन
भाई : श्री विजयकुमार, श्री सुरेन्द्रकुमार, बा.ब्र. श्री नरेन्द्र भैयाजी
लौकिक शिक्षा : इण्टर मध्यमा (पथरिया, श्री शांति निकेतन, दि.जैन संस्कृत विद्यालय, कटनी, म.प्र.)
क्षुल्लक दीक्षा : 20 फरवरी, 1980
(फाल्गुन शु. 5 सं. 2036 बुढ़ार, शहडोल म.प्र.)
नामकरण : पूज्य क्षु. श्री 105 पूर्णसागरजी महाराज
क्षु. दीक्षा गुरु : प.पू. तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर जी महा.
मुनि दीक्षा : 9 दिसम्बर, 1983 (मगसर शु. 5 वि.सं. 2040), औरंगाबाद (महा.)
मुनि दीक्षा गुरु : प.पू.निमित्तज्ञानी आचार्य श्री 108 विमलसागरजी महाराज
आचार्य पद : 8 नवम्बर, 1992 (का. शु. 13वि.सं. 2049) रविवार, द्रोणगिरी
संयमी सृजन : आचार्य-8, मुनि - 70, गणिनी आर्यिका-4, आर्यिका-64, ऐलक-5, क्षुल्लक -29, क्षुल्लिका- 23 कुल - 203
प्रशिष्य : 100 से अधिक
समाधि सल्लेखनाएँ : लगभग 85 एवं अनेक तिर्यंच प्राणी
चातुर्मास : 1980 से 2016 तक क्रमशः दुर्ग (छत्तीसगढ़), नागपुर (महाराष्ट्र), कारंजा लाड (महाराष्ट्र), कारंजालाड (महाराष्ट्र), नागपुर (महाराष्ट्र), भावनगर (गुजरात), पाँचवा (राज.), निमाज (राज.), जयपुर (राज.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), टीकमगढ़ (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), द्रोणगिरि (म.प्र.), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), बीना (म.प्र.), ललितपुर (म.प्र.), मढ़ियाजी (जबलपुर), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), शिखरजी (झारखण्ड), गया (बिहार), श्रेयांसगिरि (म.प्र.), भिलाई (छत्तीसगढ़), कारंजालाड (महा.) मूडबिद्री (कर्नाटक), मेलचित्तामूर (तमिलनाडू), उद्गांव

(महा.), मुम्बई (महा.), गाँधीनगर (गुजरात), लोहारिया (राज.), अजमेर (राज.), जयपुर (राज.), इन्दौर (म.प्र.), श्रेयांसगिरी (म.प्र.), पथरिया (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.)।

साहित्य सृजन : 1. बारसाणुवेक्खा ग्रन्थ पर 1100 पृष्ठीय ''सर्वोदया'' संस्कृत टीका, 2. रयणसार ग्रन्थ पर 1500 पृष्ठीय ''रत्नत्रयवर्धिनी'' संस्कृत टीका, श्रमण संबोधनी टीका लेखन जारी है, 3. अनेक शोधात्मक, चिन्तनशील, बालकोपयोगी कथा, अनुवाद, गद्य, संपादित साहित्य, जीवनी एवं प्रवचन साहित्य 150 से अधिक ग्रंथ।

पंचकल्याणक : लघु वृहद् मिलाकर-67

उपाधियाँ : डॉक्ट्रेट आदि 44 से अधिक

सिद्धांत वाचनाएँ : धवल ग्रन्थ की 16 पुस्तकें तथा जयधवल ग्रंथ की 6 पुस्तकें, शेष जारी हैं।

गोष्ठियाँ : विद्वत, शिक्षक, प्राचार्य, न्यायाधीश-वकील, डॉक्टर्स, शासनिक।

अहिंसा, शाकाहार एवं व्यसन मुक्ति

अभियान : भिण्ड (म.प्र.), बीना (म.प्र.), भिलाई (छ.ग.), कारंजा (महा.), मेलचित्तामूर (तमिल.), उद्‌गाँव (महा.), गाँधीनगर (गुजरात), लोहारिया (राज.), अजमेर (राज.), जयपुर (राज.), इन्दौर (म.प्र.) श्रेयांसगिरि (म.प्र.), पथरिया (म.प्र.), भिण्ड (म.प्र.), जिसमें 18 लाख से अधिक छात्र-छात्रायें व्यसनमुक्त, शाकाहारी एवं अहिंसा के उपासक बन चुके हैं।

शिविर : प्रतिवर्ष श्री विराग सम्यग्ज्ञान शिविर, प्रतिभा संस्कार शिविर, पूजन प्रशिक्षण शिविर, भक्तामर शिविर, श्रावक संस्कार शिविर आदि।

विशेष प्रवचन : कॉलेज, स्कूल, जेल, न्यायालय, गौशाला, वृद्धाश्रम, गुरुकुल, मुख्य चौराहे आदि पर हुए।

जेल प्रवचन : भिण्ड, टीकमगढ़, दुर्ग, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, जयपुर, अजमेर, इन्दौर, पन्ना, दमोह।

न्यायालय प्रवचन: अजमेर

पगविहार : 70,000 किलोमीटर से अधिक।

संघ सम्मेलन : भिण्ड, श्रेयांसगिरी, बीना, ललितपुर, श्रवणबेलगोला, औरंगाबाद, जयपुर।

वृहद् यति सम्मेलन:

एवं युगप्रतिक्रमण जयपुर (200 शिष्य-प्रशिष्य, अन्य साधु भी) श्रमण-श्रमणी की प्राचीन परम्परा की पुन: स्थापना।

# द्रव्यसंग्रह

## श्रीमन्नेमिचन्द्र-सिद्धान्तचक्रवर्ती-विरचित

### मंगलाचरण

**जीव-मजीवं दव्वं, जिणवर-वसहेण जेण णिद्दिट्ठं।**
**देविंद-विंद-वंदं, वंदे तं सव्वदा सिरसा।।1।।**

**अन्वयार्थ**- **(जेण)** जिस **(जिणवरवसहेण)** तीर्थंकर देव ने या चौबीसों तीर्थंकरों ने **(जीव-मजीवं दव्वं)** जीव और अजीव द्रव्यें **(णिद्दिट्ठं)** कहीं हैं। **(देविंद-विंद-वंदं)** इन्द्रों के समूह से नमस्कार करने योग्य **(तं)** उन तीर्थंकर भगवान् को **(सिरसा)** सिर नवाकर **(सव्वदा)** हमेशा **(वंदे)** नमस्कार करता हूँ।

**अर्थ**- मैं उन तीर्थंकर भगवान् को अथवा चौबीसों तीर्थंकरों को सिर नवाकर सदा नमस्कार करता हूँ, जिन्होंने जीव और अजीव द्रव्यों का वर्णन किया है और जो सौ इन्द्रों से वन्दनीय हैं।

**अर्थ**- भवनवासियों के चालीस, व्यन्तरदेवों के बत्तीस, कल्पवासियों के चौबीस, चन्द्र, सूर्य, चक्रवर्ती, सिंह ये सौ इन्द्र होते हैं।

### जीवद्रव्य के अधिकार

**जीवो उवओगमओ अमुत्ति कत्ता सदेह-परिमाणो।**
**भोत्ता संसारत्थो, सिद्धो सो विस्स-सोड्ढगई।।2।।**

**अन्वयार्थ**- **(सो जीवो)** वह जीव जीने वाला **(उवओगमओ)** उपयोगमय **(अमुत्ति)** अमूर्तिक, **(कत्ता)** कर्मों का कर्ता **(सदेह-परिमाणो)**

छोटे-बड़े निज शरीर के बराबर रहने वाला **(भोत्ता)** कर्मों के फल को भोगने वाला **(संसारत्थो)** संसारी **(सिद्धो)** सिद्ध और **(विस्स-सोड्ढगई)** स्वभाव से ऊपर को गमन करने वाला है।

**अर्थ**- प्रत्येक जीव जीने वाला, उपयोगमय, अमूर्तिक, कर्मों का कर्ता, नामकर्म के उदय से प्राप्त अपने छोटे-बड़े शरीर के बराबर रहने वाला, शुभाशुभ कर्मों के फल को भोगने वाला, संसारी, सिद्ध और स्वभाव से ऊपर गमन करने वाला है।

## जीवत्व अधिकार

**तिक्काले चदुपाणा, इंदिय-बल-माउ आणपाणो य।**
**ववहारा सो जीवो णिच्छय-णयदो तु चेदणा जस्स।।3।।**

**अन्वयार्थ**- **(जस्स)** जिसके **(ववहारा)** व्यवहारनय से **(तिक्काले)** तीनों कालों में **(इंदिय)** इंद्रिय **(बलं)** बल **(आउ)** आयु **(च)** और **(आणपाणो)** श्वासोच्छ्वास ये **(चदुपाणा)** चार प्राण होते हैं **(दु)** और **(णिच्छयणयदो)** निश्चयनय से **(जस्स)** जिसके **(चेदणा)** चेतना **(होदि)** होती है सो वह **(जीवो)** जीव है।

**अर्थ**- जिसके व्यवहार नय से तीनों कालों में इंद्रिय, बल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण होते हैं और निश्चयनय से जिसके चेतना होती है, वह जीव है।

## उपयोगाधिकार का वर्णन

**उवओगो दुवियप्पो दंसण-णाणं च दंसणं चदुधा।**
**चक्खु-अचक्खु-ओही, दंसणमह केवलं णेयं।।4।।**

**अन्वयार्थ**- **(उवओगो)** उपयोग **(दुवियप्पो)** दो प्रकार का है **(दंसण)** दर्शनोपयोग **(च)** और **(णाणं)** ज्ञानोपयोग उनमें **(दंसणं)** दर्शनोपयोग **(चक्खु)** चक्षुदर्शन **(अचक्खु)** अचक्षुदर्शन **(ओही)** अवधिदर्शन **(अह)** और **(केवलं)** केवलदर्शन (इस प्रकार) **(दंसणं)** दर्शनोपयोग **(चदुधा)** चार प्रकार **(णेयं)** जानना चाहिये।

**अर्थ**- उपयोग दो प्रकार का है दर्शनोपयोग और ज्ञानोपयोग। चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन और केवलदर्शन इस प्रकार दर्शनोपयोग चार प्रकार का जानना चाहिए।

## ज्ञानोपयोग के भेद

**णाणं अट्ठ-वियप्पं, मदि-सुद-ओही अणाण-णाणाणि।**
**मण-पज्जय-केवल-मवि, पच्चक्ख-परोक्ख भेयं च।।5।।**

**अन्वयार्थ**- **(अणाणणाणाणि)** अज्ञान और ज्ञान रूप **(मदिसुद ओही)** मति, श्रुत, अवधि **(मणपज्जय)** मनः पर्याय **(अवि)** और **(केवलं)** केवल ज्ञान इस प्रकार **(णाणं)** ज्ञानोपयोग **(अट्ठवियप्पं)** आठ प्रकार का होता है **(च)** और वह ज्ञानोपयोग, **(पच्चक्ख-परोक्ख भेयं)** प्रत्यक्ष और परोक्ष भेद रूप हैं।

**अर्थ**- मति, श्रुत, अवधि ये अज्ञान और ज्ञान रूप तथा मनः पर्यय और केवल ज्ञान की अपेक्षा ज्ञानोपयोग आठ प्रकार का होता है वह ज्ञानोपयोग प्रत्यक्ष और परोक्ष भेद रूप है।

## जीव का लक्षण

**अट्ठ-चदु-णाण-दंसण-सामण्णं जीवलक्खणं भणियं।**
**ववहारा सुद्धणया, सुद्धं पुण दंसणं णाणं।।6।।**

**अन्वयार्थ**- **(ववहारा)** व्यवहार नय से **(अट्ठ-चदुणाणदंसण)** आठ प्रकार का ज्ञान और चार प्रकार का दर्शन **(सामण्णं)** सामान्य से **(जीवलक्खणं)** जीव का लक्षण **(भणियं)** कहा गया है। **(पुण)** और **(सुद्धणया)** शुद्ध निश्चयनय से **(सुद्धं)** शुद्ध **(दंसणं)** दर्शन और **(णाणं)** ज्ञान **(जीवलक्खणं)** जीव का लक्षण है।

**अर्थ**- व्यवहारनय से यथायोग्य आठ प्रकार का ज्ञान और चार प्रकार का दर्शन जीव का लक्षण है। किन्तु शुद्ध निश्चयनय से शुद्धदर्शन और शुद्ध ज्ञान ही जीव का लक्षण कहा गया है।

## अमूर्तित्वाधिकार का वर्णन

**वण्ण रस पंच गंधा, दो फासा अट्ठ णिच्छया जीवे।**
**णो संति अमुत्ति तदो ववहारा मुत्ति बंधादो।।7।।**

**अन्वयार्थ**- **(जीवे)** जीव में **(णिच्छया)** निश्चयनय से **(पंच)** पाँच **(वण्ण)** वर्ण **(पंच)** पाँच **(रस)** रस **(दो)** दो **(गंधा)** गंध **(अट्ठ)** आठ **(फासा)** स्पर्श **(णो)** नहीं **(संति)** होते हैं **(तदो)** इस कारण से **(अमुत्ति)** अमूर्तिक है और **(ववहारा)** व्यवहार नय से **(बंधादो)** कर्म बंधसहित होने से **(मुत्ति)** मूर्तिक है।

**अर्थ**- जीव में निश्चयनय से पाँच वर्ण, पाँच रस, दो गंध, आठ स्पर्श नहीं होते हैं इस कारण से अमूर्तिक है। और व्यवहारनय से कर्मबंधन सहित होने से मूर्तिक है।

## कर्तृत्वाधिकार का वर्णन

**पुग्गल-कम्मा-दीणं, कत्ता ववहारदो दु णिच्छयदो।**
**चेदण-कम्मा-णादा, सुद्धणया सुद्धभावाणं।।8।।**

**अन्वयार्थ**- **(आदा)** आत्मा, जीव **(ववहारा)** व्यवहारनय से **(पुग्गल-कम्मा-दीणं)** ज्ञानावरणादिक पुद्गलकर्म आदि का **(णिच्छयदो)** अशुद्ध निश्चयनय से **(चेदणकम्माण)** रागादिक भावकर्मों का **(दु)** और **(सुद्धणया)** शुद्ध निश्चयनय से **(सुद्धभावाणं)** शुद्धदर्शन और शुद्धज्ञान आदि चैतन्य भावों का **(कत्ता)** कर्ता है।

**अर्थ**- जीव व्यवहारनय से ज्ञानावरणादिक पुद्गल कर्मों का तथा अशुद्ध निश्चयनय से रागादिक भावकर्मों का और शुद्ध निश्चयनय से शुद्धदर्शन शुद्धज्ञान आदि चैतन्य भावों का कर्ता है।

## भोक्तृत्वाधिकार का वर्णन

**ववहारा सुहदुक्खं, पुग्गल-कम्मप्फलं पभुंजेदि।**
**आदा णिच्छयणयदो, चेदण-भावं खु आदस्स।।9।।**

**अन्वयार्थ**- **(आदा)** जीव **(ववहारा)** व्यवहारनय से **(पुग्गल कम्मप्फलं)** पुद्गलमय कर्मों के फल **(सुहदुक्खं)** सुख और दुख का **(पभुंजेदि)**

भोक्ता है। और **(णिच्छयणयदो)** निश्चयनय से **(आदस्य)** आत्मा के **(चेदणभाव)** शुद्धदर्शन और शुद्धज्ञान रूप भावों का **(खु)** ही **(पभुंजेदि)** भोक्ता है।

**अर्थ-** जीव व्यवहारनय से ज्ञानावरणादिक कर्मों के फलस्वरूप सुख और दुःख का भोक्ता है और निश्चयनय से आत्मा के शुद्धदर्शन तथा शुद्धज्ञान रूप भावों का ही भोक्ता है।

## स्वदेहपरिमाणत्व अधिकार का वर्णन

**अणु-गुरू-देह-पमाणो, उवसंहारप्पसप्पदो चेदा।**
**असमुहदो ववहारा, णिच्छय-णयदो असंखदेसो वा।।10।।**

**अन्वयार्थ-(चेदा)** आत्मा **(ववहारा)** व्यवहारनय से **(उवसंहारप्पसप्पदो)** संकोच विस्तार गुण के कारण **(असमुहदो)** समुद्घात अवस्था के अतिरिक्त शेष सब अवस्थाओं में **(अणुगुरूदेहपमाणो)** नामकर्म के द्वारा प्राप्त छोटे या बड़े निजशरीर के बराबर **(वा)** और **(णिच्छयणयदो)** निश्चयनय से **(असंखदेसो)** असंख्यात प्रदेश वाले लोकाकाश के बराबर है।

**अर्थ-** आत्मा व्यवहारनय से समुद्घात के सिवाय शेष हालतों में शरीर नामकर्म के उदय से होने वाले संकोच-विस्तार गुण के कारण घट आदि में स्थित दीपक की तरह अपने छोटे-बड़े शरीर के बराबर है। और निश्चयनय से असंख्यात प्रदेश वाले लोकाकाश के बराबर है।

## संसारित्व अधिकार का वर्णन

**पुढवि-जल-तेउ-वाऊ, वणप्फदी विविह-थावरे इंदी।**
**विग-तिग-चदु-पंचक्खा, तस-जीवा होंति संखादी।।11।।**

**अन्वयार्थ- (पुढवि)** पृथ्वीकायिक, **(जल)** जलकायिक, **(तेउ)** अग्नि कायिक, **(वाऊ)** वायुकायिक और **(वणप्फदी)** वनस्पतिकायिक **(विविह थावरेइंदी)** अनेक प्रकार के एकेन्द्रिय स्थावर **(होंति)** है और **(संखादि)** शंखादिक **(विगतिगचदुपंचक्खा)** दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय और पंचेन्द्रिय **(तसजीवा)** त्रसजीव **(होंति)** हैं।

**अर्थ-** पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और

वनस्पति कायिक अनेक प्रकार के एकेन्द्रिय स्थावर हैं और शंखादिक दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय और पंचेन्द्रिय त्रसजीव हैं।

## चौदह जीवसमास-जीवों के संक्षिप्त भेद

**समणा अमणा णेया, पंचिंदिय-णिम्मणा परे सव्वे।**
**वादर-सुहुमे-इंदिय, सव्वे पज्जत्त इदरा य।।12।।**

**अन्वयार्थ**- **(पंचिंदिय)** पंचेन्द्रिय जीव **(समणा)** संज्ञी **(अमणा)** असंज्ञी **(परे सव्वे)** दूसरे सब एकेन्द्रिय आदि चारों **(णिम्मणा)** असंज्ञी **(णेया)** जानना चाहिए **(एइंदिय)** एकेन्द्रिय जीव **(वादर-सुहुमे)** बादर और सूक्ष्म दो प्रकार के हैं तथा **(सव्वे)** ये सब **(पज्जत्त)** पर्याप्तक **(य)** और **(इदरा)** अपर्याप्तक होते हैं। इस प्रकार चौदह जीव समास हुए।

**अर्थ**- पंचेन्द्रिय जीव संज्ञी-असंज्ञी दो प्रकार के होते हैं। शेष चारों असंज्ञी ही होते हैं। एकेन्द्रिय के बादर और सूक्ष्म ये दो भेद हैं। इस प्रकार संज्ञी पंचेन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय सूक्ष्म एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय ये सभी पर्याप्तक और अपर्याप्तक होते हैं। इनको चौदह जीवसमास कहते हैं।

## मार्गणा और गुणस्थानों के द्वारा संसारी जीव का वर्णन

**मग्गण-गुण-ठाणेहिं य, चउदसहि हवंति तह असुद्धणया।**
**विण्णेया संसारी, सव्वे सुद्धा हु सुद्धणया।।13।।**

**अन्वयार्थ**- **(तह)** तथा **(संसारी)** संसारी जीव **(असुद्धणया)** व्यवहार नय से **(चउदसहि)** चौदह-चौदह **(मग्गणगुणठाणेहिं)** मार्गणाओं और गुणस्थानों की अपेक्षा **(चउदस)** चौदह-चौदह प्रकार **(हवंति)** होते हैं **(य)** और **(सुद्धणया)** निश्चयनय से **(सव्वे)** सब जीव **(सुद्धा)** शुद्ध **(हु)** ही **(विण्णेया)** जानना चाहिए।

**अर्थ**- संसारी जीव व्यवहारनय से मार्गणाओं और गुणस्थानों की अपेक्षा से भी चौदह-चौदह प्रकार के होते हैं। किन्तु निश्चयनय से सब जीव शुद्ध ही है, ऐसा जानना चाहिए।

## सिद्धत्व और ऊर्ध्वगमनत्व अधिकार का वर्णन

**णिक्कम्मा अट्ठगुणा, किंचूणा चरमदेहदो सिद्धा।**
**लोयग्गठिदा णिच्चा उप्पादव-एहिं संजुत्ता।।14।।**

**अन्वयार्थ**- जो **(णिक्कम्मा)** ज्ञानावरणादि आठ कर्म रहित **(अट्ठगुणा)** सम्यक्त्व आदि आठ गुण सहित **(चरमदेहदो)** अंतिम शरीर से **(किंचूणा)** कुछ कम होते हैं वे **(सिद्धा)** सिद्ध हैं, और वे सिद्ध **(णिच्चा)** विनाशरहित और **(उप्पादवएहि)** उत्पाद, व्यय से **(संजुत्ता)** युक्त **(लोयग्गठिदा)** लोक के अग्रभाग में स्थित होते हैं।

**अर्थ**- जो ज्ञानावरणादि आठ कर्म रहित सम्यक्त्व आदि आठ सहित अन्तिम शरीर से कुछ कम होते हैं वे सिद्ध हैं, और वे सिद्ध विनाशरहित एवं उत्पाद, व्यय से युक्त लोक के अग्रभाग में स्थित होते हैं।

## अजीव द्रव्यें व उनके मूर्तिकामूर्तिकपना

**अज्जीवो पुण णेओ, पुग्गल-धम्मो अधम्म आयासो।**
**कालो पुग्गल मुत्तो, रूवादि-गुणो अमुत्ति सेसा दु।।15।।**

**अन्वयार्थ**- **(पुण)** और **(पुग्गल)** पुद्गल **(धम्मो)** धर्म **(अधम्म)** अधर्म **(आयासो)** आकाश **(दु)** और **(कालो)** काल **(अज्जीवो)** अजीवद्रव्य **(णेओ)** जानना चाहिए, उनमें **(रूवादिगुणो)** रूप, रस, गंध और स्पर्श गुण वाला **(पुग्गल)** पुद्गलद्रव्य **(मुत्तो)** मूर्तिक हैं और **(सेसा)** शेष चार द्रव्यें **(अमुत्ति)** अमूर्तिक **(णेया)** जानना चाहिए।

**अर्थ**- अजीव द्रव्य के पाँच भेद हैं। पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल इनमें पुद्गल द्रव्य मूर्तिक है क्योंकि उसमें रूप, रस, गंध ओर स्पर्श पाया जाता है। शेष धर्म, अधर्म, आकाश, और काल ये चार द्रव्यें अमूर्तिक हैं, क्योंकि उनमें रूपादि गुण नहीं होते हैं।

## पुद्गल की विभाव व्यंजन पर्यायें

**सद्दो बंधो सुहमो, थूलो संठाण-भेद-तम-छाया।**
**उज्जोदा-दव-सहिया, पुग्गल-दव्वस्स पज्जाया।।16।।**

**अन्वयार्थ**- **(सद्दो)** शब्द **(बंधो)** बन्ध **(सुहमो)** सूक्ष्मत्व **(थूलो)** स्थूलत्व **(संठाणभेदतमछाया)** आकार, खण्ड, अन्धकार और छाया **(उज्जोदादवसहिया)** उद्योत और आतप सहित ये सब **(पुग्गलदव्वस्स)** पुद्गल द्रव्य की **(पज्जाया)** पर्यायें हैं।

**अर्थ**- शब्द, बन्ध, सूक्ष्मत्व, स्थूलत्व, आकार, खण्ड, अन्धकार, छाया, उद्योत, आतप से सब पुद्गल द्रव्य की पर्यायें हैं।

## धर्म द्रव्य का लक्षण

**गई-परि-णयाण धम्मो, पुग्गल-जीवाण गमण-सहयारी।**
**तोयं जह मच्छाणं, अच्छंता णेव सो णेई।।17।।**

**अन्वयार्थ**- **(जह)** जैसे **(तोयं)** जल **(गईपरिणयाण)** गमन करती हुई **(मच्छाणं)** मछलियों को **(गमणसहयारी)** चलने में सहायक है **(तह)** उसी प्रकार जो **(गईपरिणयाण)** चलते हुए **(पुग्गलजीवाणं)** पुद्गल और जीवों को **(गमणसहयारी)** चलने में सहायक है, वह **(धम्मो)** धर्मद्रव्य णेओ=जानना चाहिए किन्तु **(सो)** वह धर्म द्रव्य **(अच्छंता)** ठहरे हुए जीवों और पुद्गलों को **(णेव)** नहीं **(णेई)** चलाता हैं।

**अर्थ**- जैसे जल चलती हुई मछली को चलने में सहायता करता है उसी प्रकार जो द्रव्य चलते हुए जीव और पुद्गल को चलने में सहायता करता है, वह धर्मद्रव्य कहलाता है किन्तु जैसे पानी मछली को चलाने के लिए प्रेरणा **(प्रेरित)** नहीं करता, उसी प्रकार यह धर्मद्रव्य भी ठहरे हुए जीव और पुद्गलों को जबरदस्ती नहीं चलाता।

## अधर्म द्रव्य का लक्षण

**ठाण-जुदाण अधम्मो, पुग्गल-जीवाण ठाण सहयारी।**
**छाया जह पहियाणं, गच्छंता णेव सो धरई।।18।।**

**अन्वयार्थ**- **(जह)** जैसे **(छाया)** छाया **(ठाणजुदाण)** ठहरते हुए **(पहियाणं)** पथिक जनों को **(ठाणसहयारी)** ठहरने में सहायक (होदि=होती हैं, तह = उसी प्रकार, जो = जो) **(ठाणजुदाण)** ठहरते हुए **(पुग्गलजीवाण)**

पुद्गल और जीवों को **(ठाणसहयारी)** ठहरने में सहायक (होदि = होता हैं, सो = वह) **(अधम्मो)** अधर्मद्रव्य (णेओ=जानना चाहिए) **(सो)** वह अधर्मद्रव्य **(गच्छंता)** गमन करते हुए जीव और पुद्गलों को **(णेव)** नहीं **(धरई)** ठहराता हैं।

**अर्थ**- जैसे यदि मुसाफिर ठहरना चाहें तो वृक्ष की छाया उसके ठहरने में सहायता करती है, किन्तु वह मुसाफिर चलना चाहे तो उसे प्रेरणा कर नहीं ठहराती, उसी प्रकार जो जीव या पुद्गल ठहर रहे हैं, उन्हें ठहरने में जो सहायता करता हैं, वह अधर्मद्रव्य कहलाता हैं। चलने वाले जीव और पुद्गल को जबरदस्ती नहीं ठहराता हैं।

## आकाश द्रव्य का लक्षण

**अव-गास-दाण-जोग्गं, जीवादीणं वियाण आयासं।**
**जेण्हं लोगा-गासं, अल्लोगा-गास-मिदि दुविहं।।19।।**

**अन्वयार्थ**- **(जीवादीणं)** जीवादिक छहों द्रव्यों के **(अवगास)** अवकाश देने में समर्थ द्रव्य को **(जेण्हं)** भगवान जिनेन्द्र द्वारा कहा हुआ **(आयासं)** आकाश द्रव्य **(वियाण)** जानना चाहिए (तं=वह आकाश) **(लोगागासं)** लोकाकाश और **(अल्लोगागासं)** अलोकाकाश **(इदि)** इस प्रकार **(दुविहं)** दो प्रकार का है।

**अर्थ**- जीवादिक छहों द्रव्यों के अवकाश देने में समर्थ द्रव्य को भगवान् जिनेन्द्र द्वारा कहा हुआ आकाश द्रव्य जानना चाहिए, वह आकाशद्रव्य लोकाकाश और अलोकाकाश इस प्रकार दो प्रकार का हैं।

## लोकाकाश और अलोकाकाश का वर्णन

**धम्मा-धम्मा-कालो, पुग्गल-जीवा य संति जावदिए।**
**आयसे सो लोगो, तत्तो परदो अलोगुत्तो।।20।।**

**अन्वयार्थ**- **(जावदिए)** जितने **(आयासे)** आकाश में **(धम्मा-धम्मा)** धर्मद्रव्य और अधर्मद्रव्य **(कालो)** कालद्रव्य **(य)** और **(पुग्गलजीवा)** पुद्गलद्रव्य और जीवद्रव्य **(सन्ति)** रहते हैं **(सो)** वह **(लोगो)** लोकाकाश है **(तत्तो)** उससे **(परदो)** बाहर **(अलोगुत्तो)** अलोकाकाश कहा गया है।

**अर्थ**- जितने आकाश में धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य कालद्रव्य, पुद्गलद्रव्य और जीवद्रव्य रहते हैं, वह लोकाकाश है, उससे बाहर आलोकाकाश कहा गया है।

## कालद्रव्य का लक्षण

**दव्व-परि-वट्ट-रूवो, जो सो कालो हवेइ ववहारो।**
**परिणा-मादी-लक्खो, वट्टण-लक्खो हु परमट्ठो।।21।।**

**अन्वयार्थ**- **(जो)** जो **(दव्वपरिवट्टरूवो)** द्रव्यों के परिवर्तनरूप और **(परिणा-मादी-लक्खो)** परिणमन आदि लक्षण वाला होता है **(सो)** वह **(ववहरो)** व्यवहार **(कालो)** काल **(हवेइ)** है **(हु)** और **(वट्टणलक्खो)** वर्तनालक्षण वाला **(परमट्ठो)** निश्चय काल है।

**अर्थ**- जो द्रव्य परिवर्तनरूप है और परिणाम, क्रिया, परत्व, अपरत्व से जाना जाता है, वह व्यवहार काल कहलाता है तथा वर्तना जिसका लक्षण है, वह निश्चयकाल कहलाता है।

## कालद्रव्य के प्रदेश

**लोया-यास-पदेसे, इक्केक्के जे ठिया हु इक्केक्का।**
**रयणाणं रासी-मिव, ते कालणू असंख-दव्वाणि।।22।।**

**अन्वयार्थ**- **(इक्केक्के)** एक-एक **(लोयायासपदेसे)** लोकाकाश के प्रदेश पर **(जे)** जो **(रयणाणं)** रत्नों की **(रासीमिव)** राशि के समान **(इक्केक्का)** एक-एक **(कालाणु)** कालद्रव्य के अणु **(ठिया)** स्थित हैं। **(ते)** वे **(कालाणु)** कालद्रव्य के अणु **(असंखदव्वाणि)** असंख्यात द्रव्य हैं।

**अर्थ**- एक-एक लोकाकाश के प्रदेश पर जो रत्नों की राशि के समान एक-एक कालद्रव्य के अणु स्थित हैं। वे कालद्रव्य के अणु असंख्यात द्रव्य हैं।

## द्रव्य और अस्तिकाय के भेद

**एवं छब्भेय-मिदं, जीवा-जीवप्प-भेददो दव्वं।**
**उत्तं कालविजुत्तं, णायव्वा पंच अत्थिकाया दु।।23।।**

**अन्वयार्थ**- इस प्रकार **(जीवाजीवप्पभेददो)** जीव और अजीव के भेद से **(इदं)** यह **(दव्वं)** द्रव्य **(छब्भेयं)** छः प्रकार **(उत्तं)** कहा गया है और **(कालविजुत्तं)** कालद्रव्य को छोड़कर **(पंच)** पाँच **(अत्थिकाया)** अस्तिकाय **(णायव्वा)** जानना चाहिए।

**अर्थ**- इस प्रकार जीव और अजीव के भेद से यह द्रव्य छः प्रकार का कहा गया है और कालद्रव्य को छोड़कर पाँच अस्तिकाय जानना चाहिए।

## अस्तिकाय का लक्षण तथा अस्तिकाय नाम का कारण

**संति जदो तेणेदे, अत्थि-त्ति भणंति जिणवरा जम्हा।**
**काया इव बहु-देसा, तम्हा काया य अत्थिकाया य।।24।।**

**अन्वयार्थ**- **(जदो)** क्योंकि **(एदे)** ये जीव आदि द्रव्य **(सन्ति)** हैं **(तेण)** इसलिए उनको **(जिणवरा)** भगवज्जिनेन्द्रदेव **(अत्थित्ति)** अस्ति ऐसा **(भणंति)** कहते हैं **(य)** और **(जम्हा)** जिस कारण से **(कायाइव)** शरीर के समान **(बहुदेसा)** बहुत प्रदेश वाले (होंति=होते है) **(तम्हा)** इस कारण **(काया)** काय **(य)** और मिलकर **(अत्थिकाया)** अस्तिकाय कहे गये हैं।

**अर्थ**- क्योंकि ये जीव आदि द्रव्य हैं इसलिए उनको भगवज्जिनेन्द्रदेव अस्ति ऐसा कहते है और जिस कारण से शरीर के समान बहु प्रदेश वाले हैं इसलिए काय और अस्ति दोनों मिलकर अस्तिकाय कहे गये हैं।

## द्रव्यों के प्रदेश व काल के अस्तिकायत्व का निषेध

**होंति असंखा जीवे, धम्मा-धम्मे अणंत आयासे।**
**मुत्ते तिविह पदेसा, कालस्सेगो ण तेण सो काओ।।25।।**

**अन्वयार्थ**- **(जीवे)** एक जीव में **(धम्मा-धम्मे)** धर्म और अधर्म द्रव्य में **(असंखा)** असंख्यात **(आयासे)** आकाश द्रव्य में **(अणन्त)** अनन्त और **(मुत्ते)** पुद्‌गल द्रव्य में **(तिविह)** संख्यात, असंख्यात और अनन्त **(पदेसा)** प्रदेश **(होंति)** होते हैं। **(कालस्स)** कालद्रव्य के **(एगो)** एक (प्रदेश होता है) **(तेण)** इसलिए **(सो)** वह कालद्रव्य **(काओ)** कायवान **(ण)** नहीं हैं।

**अर्थ**- एक जीव, धर्म और अधर्म द्रव्य में असंख्यात, आकाश द्रव्य में अनन्त और पुद्‌गल द्रव्य में संख्यात, असंख्यात और अनन्त प्रदेश होते हैं। कालद्रव्य के एक प्रदेश होता है इसलिए वह कालद्रव्य कायवान नहीं हैं।

## पुद्‌गल के परमाणु के अस्तिकायपना

**एयपदेसो वि अणू, णाणा-खंधप्पदेसदो होदि।**
**बहुदेसो उवयारा, तेण य काओ भणंति सव्वण्हु।।26।।**

**अन्वयार्थ**- **(एयपदेसो वि अणु)** एक प्रदेश वाला भी पुद्गल का परमाणु **(णाणाखंधप्पदेसदो)** नानास्कंधों का कारण होने से **(बहुदेसो)** बहुप्रदेशी **(होदि)** होता है **(य)** और **(तेण)** इसलिए **(सो)** वह **(सव्वण्हु)** सर्वज्ञदेव (तं=उसे) **(उवयारो)** व्यवहारनय से/उपचार से **(काओ)** कायवान **(भणंति)** कहते हैं।

**अर्थ**- एक प्रदेश वाला भी पुद्गल का परमाणु नानास्कंधों का कारण होने से बहुप्रदेशी होता है और इसलिए सर्वज्ञदेव व्यवहारनय से/उपचार से कायवान कहते हैं।

## प्रदेश का लक्षण और शक्ति

**जावदियं आयासं, अविभागी-पुग्गलाणु-वट्ठद्धं।**
**तं खु पदेसं जाणे, सव्वाणुट्-ठाण-दाण-रिहं।।27।।**

**अन्वयार्थ**- **(जावदियं)** जितना **(आयासं)** आकाश **(अविभागी-पुग्गलाणु-वट्ठद्धं)** पुद्गल के सबसे छोटे परमाणु से रूकने वाला है **(तं)** उसको **(खु)** निश्चय से **(सव्वापुट्ठाणदाणरिहं)** सर्व परमाणुओं को स्थान देने में समर्थ **(पदेसं)** प्रदेश **(जाणे)** जानना चाहिए।

**अर्थ**- जितना आकाश पुद्गल के सबसे छोटे परमाणु से रूकने वाला है उसको निश्चय से सर्व परमाणुओं को स्थान देने में समर्थ प्रदेश जानना चाहिए।

## सात पदार्थों के कहने की सकारण प्रतिज्ञा

**आसव-बंधण-संवर-णिज्जर-मोक्खा सपुण्ण-पावा जे।**
**जीवा-जीव-विसेसा, ते वि समा-सेण पभणामो।।28।।**

**अन्वयार्थ**- **(जे)** जो **(जीवाजीवविसेसा)** जीव और अजीव के विशेष भेद **(सपुण्णपावा)** पुण्य और पाप सहित **(आसवबंधणसंवरणिज्जरमोक्खा)** आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष है **(ते)** उनको **(वि)** भी **(समासेण)** संक्षेप में **(पभणामो)** कहता हूँ।

**अर्थ**- जो जीव और अजीव के विशेष भेद पुण्य और पाप सहित आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष हैं उनको भी संक्षेप से कहता हूँ।

## भावास्रव और द्रव्यास्रव का लक्षण

**आसवदि जेण कम्मं परिणामेणप्पणो स विण्णेओ।**
**भावासवो जिणुत्तो, कम्मासवणं परो होदि।।29।।**

**अन्वयार्थ**- **(अप्पणो)** आत्मा के **(जेण)** जिस **(परिणामे)** परिणाम से **(कम्मं)** कर्म **(आसवदि)** आता है **(स)** वह **(जिणुत्तो)** जिनेन्द्रदेव का कहा हुआ **(भावासवो)** भावास्रव **(विण्णेओ)** जानना चाहिए च=और **(कम्मासवणं)** ज्ञानावरणादिक पुद्‌गल कर्मों का आना **(परो)** दूसरा द्रव्यास्राव **(होदि)** है।

**अर्थ**- आत्मा के जिस परिणाम से कर्म आता है वह जिनेन्द्रदेव का कहा हुआ भाव आस्रव जानना चाहिए। ज्ञानावरणादिक पुद्‌गल कर्मों का आना द्रव्यास्रव है।

## भावास्रव के भेद

**मिच्छत्ता-विरदि-पमाद जोग-कोहादओऽथ विण्णेया।**
**पण पण पणदह तिय चदु, कमसो भेदा दु पुव्वस्स।।30।।**

**अन्वयार्थ**- **(दु)** और **(स)** वह **(पुव्वस्स)** प्रथम भावास्रव के **(कमसो)** क्रम से **(पण पण पणदस तिय चदु)** पाँच, पाँच, पन्द्रह, तीन और चार **(मिच्छत्ताविरदिपमादजोगकोहादयो)** मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, योग और कषाय के **(भेदा)** भेद **(विण्णेया)** जानना चाहिए।

**अर्थ**- और वह प्रथम भावास्रव के क्रम से पाँच, पाँच, पन्द्रह, तीन और चार मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, योग और क्रोधादि कषाय के भेद जानना चाहिए।

## द्रव्यास्रव का लक्षण और भेद

**णाणा-वरणा-दीणं,जोग्गं जं पुग्गलं समा-सवदि।**
**दव्वासओ स णेओ, अणेय-भेओ जिणक्खादो।।31।।**

**अन्वयार्थ**- **(णाणावरणादीणं)** ज्ञानावरणादि आठ कर्मों के **(जोग्गं)** होने योग्य **(जं)** जो **(पुग्गलं)** पुद्‌गल द्रव्य **(समासवदि)** आता है **(स)** वह **(जिणक्खादो)** भगवज्जिनेन्द्र देव के द्वारा कहा हुआ **(अणेयभेओ)** अनेक भेद वाला **(दव्वासओ)** द्रव्यास्रव **(णेयो)** जानना चाहिए।

**अर्थ**- ज्ञानावरणादि आठ कर्मों के होने योग्य जो पुद्गल द्रव्य आता है, वह भगवज्जिनेन्द्र देव के द्वारा कहा हुआ अनेक भेद वाला द्रव्यास्रव जानना चाहिए।

## भावबंध और द्रव्यबन्ध का लक्षण

**बज्झदि कम्मं जेण दु चेदण-भावेण भाव-बंधो सो।**
**कम्माद-पदेसाणं अण्णोण्ण-पवेसणं इदरो।।32।।**

**अन्वयार्थ**- **(जेण)** जिस **(चेदणभावेण)** आत्मा के परिणाम से **(कम्मं)** कर्म **(बज्झदि)** बंधता है **(सो)** वह परिणाम **(भावबंधो)** भावबंध है, **(दु)** और **(कम्मादपदेसाणं)** कर्म और आत्मा के प्रदेशों का **(अण्णोण्णपवेसणं)** परस्पर एकमेक होकर मिल जाना **(इदरो)** दूसरा द्रव्यबन्ध हैं।

**अर्थ**- जिस आत्मा के परिणाम से कर्म बंधता है, वह परिणाम भावबंध है और कर्म और आत्मा के प्रदेशों का परस्पर एकमेक होकर मिल जाना दूसरा द्रव्यबन्ध हैं।

## बन्ध के भेद और उनके कारण

**पय-डिट्ठिदि अणु भागप् पदेस भेदा दु चदुविधो बंधो।**
**जोगा पयडि-पदेसा, ठिदि-अणुभागा कसायदो होंति।।33।।**

**अन्वयार्थ**- **(बंधो)** बंध **(पयडिट्ठिदिअणुभागप्पदेसभेदा)** प्रकृतिबंध, स्थिति बंध, अनुभागबंध और प्रदेशबंध के भेद से **(चदु विधो)** चार प्रकार है, उनमें **(पयडिपदेसा)** प्रकृतिबंध और प्रदेश बंध **(जोगा)** योग से **(दु)** और **(ठिदिअणुभागा)** स्थिति बंध और अनुभागबंध **(कसायदो)** कषाय से **(होंति)** होते हैं।

**अर्थ**- 1. प्रकृतिबंध 2. स्थितिबंध 3. अनुभागबंध और 4. प्रदेशबंध इस प्रकार बंध चार प्रकार का है। उनमें प्रकृतिबंध और प्रदेशबंध योगे से होते है तथा स्थिति बंध और अनुभागबंध कषाय से होते हैं।

## भावसंवर और द्रव्यसंवर का लक्षण

**चेदण-परिणामो जो, कम्मस्सासव-णिरोहणे हेदू।**
**सो भावसंवरो खलु, दव्वा-सवरोहणे अण्णो।।34।।**

**अन्वयार्थ**- **(जो)** जो **(चेदण)** आत्मा का परिणाम **(कम्मस्स)** कर्म के **(आसवणिरोहणे)** आस्रव को रोकने में **(हेदू)** कारण है **(सो)** वह परिणाम **(खलु)** निश्चय से **(भावसंवरो)** भाव संवर है और **(जो)** जो **(दव्वा-सवरोहणे)** द्रव्य आस्रव को रोकने में **(हेदू)** कारण है **(सो)** वह **(अण्णो)** दूसरा द्रव्यसंवर हैं।

**अर्थ**- जो आत्मा का परिणाम कर्म के आस्रव को रोकने में कारण है सो वह परिणाम निश्चय से भावसंवर है और जो द्रव्य आस्रव को रोकने में कारण है वह दूसरा द्रव्यसंवर हैं।

## भाव संवर के भेद

**वद-समिदी-गुत्तीओ, धम्माणु-पेहा-परीसह-जओ य।**
**चारित्तं बहुभेया, णायव्वा भावसंवर-विसेसा।।35।।**

**अन्वयार्थ**- **(वदसमिदीगुत्तीओ)** व्रत, समिति, गुप्ति, **(धम्माणुपेहा)** धर्म, अनुप्रेक्षा, **(परीषहजओ)** परीषहजय **(य)** और **(बहुभेया)** बहुत प्रकार **(चारित्तं)** चारित्र ये सब **(भावसंवरविसेसा)** भावसंवर के भेद **(णायव्वा)** जानना चाहिए।

**अर्थ**- पाँच व्रत, पाँच समिति, तीन गुप्ति, दस धर्म, बारह अनुप्रेक्षा, बाईस परीषहजय और अनेक प्रकार का चारित्र ये सब भावसंवर के भेद हैं। अर्थात् ये सब कर्मों का आस्रव रोकने में कारण है।

## निर्जरा का लक्षण और भेद

**जह कालेण तवेण य, भुत्तरसं कम्म-पुग्गलं जेण।**
**भावेण सडदि णेया, तस्सडणं चेदि णिज्जरा दुविहा।।36।।**

**अन्वयार्थ**- **(जहकालेण)** कर्मों की स्थिति पूर्ण होने से **(भुत्तरसं)** जिसका फल भोगा जा चुका है ऐसा **(कम्मपुग्गलं)** पुद्गलमयकर्म **(जेण)** जिस **(भावेण)** परिणाम से **(सडदि)** छुटता है वहीं परिणाम सविपाक भावनिर्जरा हैं। **(य)** और **(तवेण)** तप के द्वारा **(जेण भावेणकम्मपुग्गलं सडदि)** आत्मा के जिस परिणाम से कर्म छूटता है वहीं परिणाम अविपाक भावनिर्जरा है। तथा

**(जहकालेण)** स्थिति पूर्ण होने से **(य)** अथवा **(तवेण)** तप से **(तस्सडणं)** ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्मों का छूटना सविपाक और अविपाक द्रव्य निर्जरा है **(इदि)** इस प्रकार **(णिज्जरा)** निर्जरा **(दुविहा)** दो प्रकार **(णेया)** जानना चाहिए।

**अर्थ**- कर्मों की स्थिति पूर्ण होने से जिसका फल भोगा जा चुका है ऐसा पुद्गलमयकर्म जिस परिणाम से छूटता है वहीं परिणाम सविपाक भावनिर्जरा हैं। और तप के द्वारा आत्मा के जिस परिणाम से छूटता वहीं परिणाम अविपाक भावनिर्जरा हैं, तथा स्थिति पूर्ण होने से अथवा तप से ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्मों का छूटना इस प्रकार निर्जरा के दो प्रकार जानना चाहिए।

## मोक्ष का लक्षण व भेद

**सव्वस्स कम्मणो जो, खयहेदू अप्पणो हु परिणामो।**
**णेओ स भाव-मोक्खो दव्वविमोक्खो य कम्म-पुह-भावो।।37।।**

**अन्वयार्थ**- **(जो)** जो **(अप्पणो)** आत्मा का **(परिणामो)** परिणाम **(सव्वस्स)** समस्त **(कम्मणो)** कर्मों के **(खयहेदू)** क्षय होने का कारण है **(स)** वह परिणाम **(हु)** ही **(भावमोक्खो)** भावमोक्ष **(णेओ)** जानना चाहिए **(य)** और **(कम्मपुहभावो)** ज्ञानावरणादि द्रव्य कर्मों का छूट जाना **(दव्वविमोक्खो)** द्रव्यमोक्ष हैं।

**अर्थ**- जो आत्मा का परिणाम समस्त कर्मों के क्षय होने का कारण है वह परिणाम ही भावमोक्ष जानना चाहिए और ज्ञानावरणादि द्रव्य कर्मों का छूट जाना द्रव्यमोक्ष हैं।

## पुण्य और पाप का वर्णन

**सुह-असुह-भाव-जुत्ता, पुण्णं पावं हवंति खलु जीवा।**
**सादं सुहाउ णामं, गोदं पुण्णं पराणि पावं च।।38।।**

**अन्वयार्थ**- **(सुहअसुहभावजुता)** अच्छे और खोटे परिणामों सहित **(जीवा)** जीव **(खलु)** निश्चय से **(पुण्णं)** पुण्यरूप **(च)** और **(पावं)** पाप रूप **(हवंति)** होते हैं और **(सादं)** साता वेदनीय **(सुहाउ)** शुभ आयु **(णामं)** शुभनाम **(गोदं)** उच्च गोत्र ये कर्म **(पुण्णं)** पुण्यरूप हैं। **(च)** और **(पराणि)** शेष सब कर्म **(पावं)** पापरूप **(हवंति)** हैं।

**अर्थ**- अच्छे और खोटे परिणामों सहित जीव निश्चय से पुण्यरूप और पापरूप होते हैं। और साता वेदनीय, शुभ आयु, शुभनाम, उच्च गोत्र ये कर्म पुण्य रूप हैं। और शेष सब कर्म पाप रूप हैं।

## व्यवहार और निश्चय मोक्षमार्ग का लक्षण

**सम्मद्-दंसण णाणं, चरणं मोक्खस्स कारणं जाणे।**
**ववहारा णिच्छयदो, तत्तिय-मइयो णिओ अप्पा।।39।।**

**अन्वयार्थ**- **(ववहारा)** व्यवहारनय से **(सम्मद्दंसणणाणंचरणं)** सम्यक्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र **(च)** और **(णिच्छयदो)** निश्चयनय से **(तत्तियमइयो)** उन तीनों सहित **(णिओ)** अपना **(अप्पा)** आत्मा **(मोक्खस्स)** मोक्ष का **(कारणं)** कारण **(जाणे)** जानना चाहिए।

**अर्थ**- व्यवहानय से सम्यक्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र मोक्ष का कारण जानो और निश्चयनय से उन तीनों सहित अपनी आत्मा ही मोक्ष का कारण जानना चाहिए।

## आत्मा ही को निश्चय मोक्षमार्ग कहने का कारण

**रयणत्तयं ण वट्टइ, अप्पाणं मुयत्तु अण्ण-दवि-यम्हि।**
**तम्हा तत्तिय-मइयो, होदि हु मोक्खस्स कारणं आदा।।40।।**

**अन्वयार्थ**- **(रयणतयं)** रत्नत्रय **(अप्पाणं)** आत्मा को **(मुयत्तु)** छोड़कर **(अण्णदवियम्हि)** अन्य द्रव्य में **(ण वट्टइ)** नहीं रहता **(तम्हा)** इसलिए **(तत्तियमइयो)** उन तीनों सहित **(आदा)** आत्मा **(हु)** ही **(कारण)** कारण **(होदि)** होता हैं।

**अर्थ**- रत्नत्रय आत्मा को छोड़कर अन्य द्रव्य में नहीं रहता, इसलिए उन तीनों सहित आत्मा ही मोक्ष का कारण होता हैं।

## व्यवहार सम्यग्दर्शन का लक्षण

**जीवादी-सद्-दहणं, सम्मतं रूव-मप्पणो तं तु।**
**दुरभि-णिवेस-विमुक्कं, णाणं सम्मं खु होदि सदि जम्हि।।41।।**

**अन्वयार्थ**- **(जम्हि सदि)** जिसके होने पर **(खु)** ही **(णाणं)** ज्ञान **(दुरभिणिवेसविमुक्कं)** संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय रहित **(सम्मं)** सत्यार्थ (सम्यक्) **(होदि)** होता है (ऐसा) **(जीवादीसद्दहणं)** जीवादिक सातों तत्वों का श्रद्धान **(सम्मतं)** सम्यग्दर्शन है **(तं)** वह सम्यग्दर्शन **(अप्पणो)** आत्मा का **(रूवं)** स्वरूप है।

**अर्थ**- जिसके होने पर ही ज्ञान संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय रहित सत्यार्थ **(सम्यग्ज्ञान)** होता है, जीवादिक सातों तत्त्वों का श्रद्धान सम्यग्दर्शन है, वह सम्यग्दर्शन आत्मा का स्वरूप हैं।

## सम्यग्ज्ञान का लक्षण

**संसय-विमोह-विब्भम-विवज्जियं अप्प-पर सरूवस्स।**
**गहणं सम्मं णाणं, सायार-मणेय-भेयं तु।।42।।**

**अन्वयार्थ**- **(अप्पपरसरूवस्स)** अपने स्वरूप का और पर वस्तुओं के स्वरूप का **(संसयविमोहविब्भम)** संशय, विर्यय और अनध्यवसाय रहित **(सायारं)** आकार-विकल्प सहित **(गहणं)** जैसा का तैसा जानना **(सम्मं णाणं)** सम्यग्ज्ञान है **(च)** और वह सम्यग्ज्ञान **(अणेय भेयं)** अनेक भेद वाला है।

**अर्थ**- अपने स्वरूप का और पर वस्तुओं के स्वरूप का संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय रहित आकार-विकल्प सहित जैसा का तैसा जानना सम्यग्ज्ञान है और वह सम्यग्ज्ञान अनेक भेद वाला है।

## दर्शनोपयोग का लक्षण

**जं सामण्णं गहणं, भावाणं णेव कट्टु-मायारं।**
**अविसेसदूण अट्ठे, दंसण-मिदि भण्णए समए।।43।।**

**अन्वयार्थ**- **(अट्ठे)** पदार्थों को **(विसेसदूण)** विशेषता नहीं करके **(आयारं)** आकार को **(णेव कट्टुं)** ग्रहण नहीं करके **(जं)** जो **(भावाणं)** पदार्थों का **(सामण्णं)** सामान्य **(गहणं)** ग्रहण करना है, वह **(समए)** शास्त्र में **(दंसणं)** दर्शनोपयोग **(भण्णए)** कहा गया है।

**अर्थ**- पदार्थों को विशेषता नहीं करके तथा आकार को ग्रहण नहीं करके जो पदार्थों का सामान्य ग्रहण करना है, वह शास्त्र में दर्शनोपयोग कहा गया है।

## दर्शन और ज्ञान की उत्पत्ति का नियम

**दसण-पुव्वं णाणं, छदु-मत्थाणं ण दोण्णि उवओगा।**
**जुगवं जम्हा केवलि, णाहे जुगवं तु ते दोवि।।44।।**

**अन्वयार्थ**- **(छदमत्थाणं)** क्षायोपशमिक ज्ञान वालों के **(णाणं)** ज्ञान **(दंसणपुव्वं)** दर्शनपूर्वक ही होता है **(जम्हा)** क्योंकि **(छदुमत्थाणं)** क्षायोपशमिक ज्ञानियों के **(दुण्णि)** दो **(उवओगा)** उपयोग **(जुगवं)** एक साथ **(ण)** नहीं होते हैं। **(तु)** किन्तु **(केवलिणाहे)** केवलज्ञानी के **(ते)** वे **(दो वि)** दोनों ही उपयोग **(जुगवं)** एक साथ होते है।

**अर्थ**- क्षायोपशमिक ज्ञान वालों के ज्ञान दर्शनपूर्वक ही होता है क्योंकि क्षायोपशमिक ज्ञानियों के दो उपयोग एक साथ नहीं होते हैं। किन्तु केवलज्ञानी के वे दोनों ही उपयोग एक साथ होते हैं।

## व्यवहार सम्यक्चारित्र का स्वरूप और भेद

**असुहादो विणि-वित्ती, सुहे पवित्ती य जाण चारित्तं।**
**वद-समिदि-गुत्ति-रूवं, ववहार-णया दु जिणभणियं।।45।।**

**अन्वयार्थ**-**(असुहादो)** अशुभ क्रियाओं से **(विणिवित्ती)** निर्वृत्ति होना **(य)** और **(सुहे)** शुभ क्रियाओं में **(पवित्ती)** प्रवृत्ति होना **(ववहारणया)** व्यवहार नय से **(चारित्तं)** चारित्र **(जाण)** जानना चाहिए **(दु)** और **(जिण-भणियं)** जिनेन्द्र भगवान के द्वारा कहा हुआ (तु=वह चारित्र) **(वदसमिदिगुत्तिरूवं)** व्रत, समिति, गुप्ति रूप है।

**अर्थ**- अशुभ क्रियाओं से निवृति होना और शुभ क्रियाओं में प्रवृति होना व्यवहार नय से चारित्र जानना चाहिए और जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा कहा हुआ व्रत, समिति, गुप्ति रूप है।

## निश्चयसम्यक्चारित्र का लक्षण

**बहि-रब्भंतर-किरिया, रोहो भव कारणप्-पणा-सट्ठं।**
**णाणिस्स जं जिणुत्तं, तं परमं सम्म-चारित्तं।।46।।**

**अन्वयार्थ**- **(णाणिस्स)** ज्ञानी का **(भवकारणप्पणासट्ठं)** संसार

के कारणों का नाश करने के लिए **(बहिरब्भंतरकिरियारोहो)** बाह्य और अभ्यन्तर क्रियाओं को रोकना **(जिणुत्तं)** जिनेन्द्रदेव के द्वारा कहा हुआ **(परमं)** उत्कृष्ट या निश्चय **(सम्मचारित्तं)** सम्यक्चारित्र **(जाण)** जानना चाहिए।

अर्थ- ज्ञानी का संसार के कारणों का नाश करने के लिए बाह्य और अभ्यन्तर क्रियाओं को रोकना जिनेन्द्रदेव के द्वारा कहा हुआ उत्कृष्ट या निश्चय सम्यक्चारित्र जानना चाहिए।

## ध्यानाभ्यास करने की हेतुपूर्वक प्रेरणा

**दुविहं पि मोक्ख-हेउं, झाणे पाउणदि जं मुणी णियमा।**
**तम्हा पयत्त-चित्ता, जूयं झाणं समब्भ-सह।।47।।**

**अन्वयार्थ**- **(जं)** क्योंकि **(मुणी)** मुनि **(णियमा)** नियम से **(झाणे)** ध्यान में स्थित होकर **(दुविहंपि)** दोनों ही **(मोक्खहेउं)** मोक्ष के कारणों को **(पाउणदि)** प्राप्त करता है। **(तम्हा)** इसलिए **(जूयं)** तुम सब **(पयत्तचित्ता)** प्रयत्नशील होते हुए **(झाणं)** ध्यान का **(समब्भसह)** भली प्रकार अभ्यास करो।

**अर्थ**- क्योंकि मुनि नियम से ध्यान में स्थित होकर दोनों ही मोक्ष के कारणों को प्राप्त करता है। इसलिए तुम सब प्रयत्नशील होते हुए ध्यान का भली प्रकार अभ्यास करो।

## ध्यान में लीन होने का उपाय

**मा मुज्झह मा रज्जह, मा दुस्सह इट्ठ-णिट्ठ अत्थेसु।**
**थिर-मिच्छह जइ चित्तं, विचित्त-झाणप्-पसिद्धीए।।48।।**

**अन्वयार्थ**- **(जइ)** यदि **(विचित्तझाणप्पसिद्धीए)** अनेक प्रकार का ध्यान करने के लिए **(चित्तं)** चित्त को **(थिरं)** स्थिर करना **(इच्छह)** चाहते हो तो **(इट्ठणिट्ठअत्थेसु)** इष्ट और अनिष्ट पदार्थों में **(मा मुज्झह)** मोह मत करो **(मा रज्जह)** राग मत करो **(मा दुस्सह)** द्वेष मत करो।

**अर्थ**- यदि अनेक प्रकार का ध्यान करने के लिए चित्त को स्थिर करना चाहते हो तो इष्ट और अनिष्ट पदार्थों में मोह मत करो, राग मत करो, द्वेष मत करो।

## ध्यान करने योग्य मंत्र

**पणतीस-सोल-छप्पण, चदु-दुग-मेगं च जवह झाएह।**
**परमेट्ठि-वाच-याणं, अण्णं च गुरू-वएसेण।।49।।**

**अन्वयार्थ**- **(परमेट्ठिवाचयाणं)** परमेष्ठीवाचक **(पणतीस)** पैंतीस **(सोल)** सोलह **(छप्पण)** छह, पाँच **(चदु)** चार **(दुगं)** दो **(एगं)** एक अक्षर वाले मंत्र को (तथा) **(गुरुवएसेण)** सच्चे गुरु के उपदेश से **(अण्णं)** और मंत्रों को भी **(जवह)** जपो **(च)** और **(झाएह)** ध्याओ।

**अर्थ**- परमेष्ठी वाचक पैंतीस, सोलह, छह, पाँच, चार, दो और एक अक्षर वाले तथा गुरुपदिष्ट (गुरु उपदेश) से अन्य मंत्रों का भी जाप और ध्यान करना चाहिए।

## अरिहंत परमेष्ठी का लक्षण

**णट्ठ-चदु-घाइ-कम्मो,दंसण-सुह-णाण-वीरिय-मइओ।**
**सुहदेहत्थो अप्पा, सुद्धो अरिहो विचिंतिज्जो।।50।।**

**अन्वयार्थ**- **(णट्ठचदुघाइकम्मो)** चार घातिया कर्म के नाशक **(दंसण)** अन्नतदर्शन, **(सुह)** अन्नतसुख, **(णाण)** अनन्तज्ञान **(वीरियमइओ)** और अनन्तवीर्य के धारक **(सुहदेहत्थो)** परमौदारिक शरीर सहित **(सुद्धो)** अठारह दोष रहित शुद्ध **(अप्पा)** आत्मा **(अरिहो)** अरिहंत परमेष्ठी है, सो वे अरिहंत परमेष्ठी **(विचिंतिज्जो)** ध्यान करने योग्य हैं।

**अर्थ**- चार घतिया कर्मों के नाशक, चार अनन्त चतुष्टय के धारक, सप्तधातुरहित-परमौदारिक शरीर सहित और अठारह दोषरहित जीव अरिहंत परमेष्ठी कहलाते हैं। उनका भी ध्यान करना चाहिए।

## सिद्ध परमेष्ठी का लक्षण

**णट्-ठट्ठ-कम्म-देहो, लोया-लोयस्स जाणओ दट्ठा।**
**पुरिसा-यारो अप्पा, सिद्धो झाएह लोय-सिह-रत्थो।।51।।**

**अन्वयार्थ**- **(णट्ठट्ठकम्मदेहो)** आठ कर्म और शरीर रहित **(लोयालोयस्स)** लोक और अलोक को **(जाणओ)** जानने वाले और **(दट्ठा)** देखने वाले **(पुरिसायारो)** पुरुषाकार **(लोयसिहरत्थो)** लोक के अग्रभाग में

स्थित **(अप्पा)** आत्मा **(सिद्धो)** सिद्ध परमेष्ठी हैं, उन सिद्ध परमेष्ठी को भी **(झाएह)** ध्याओ।

**अर्थ**- अष्टकर्म और पाँच शरीर रहित, लोक और अलोक के ज्ञाता दृष्टा पुरुष के अन्तिम शरीर से कुछ छोटे आकार के धारक और लोक के अग्रभाग में स्थित आत्मा सिद्ध परमेष्ठी कहलाते हैं। उन सिद्ध परमेष्ठी का भी ध्यान करना चाहिए।

## आचार्य परमेष्ठी का लक्षण

**दंसण-णाण-पहाणे, वीरिय-चारित्त-वरतवायारे।**
**अप्पं परं च जुंजइ, सो आयरिओ मुणी झेओ।।52।।**

**अन्वयार्थ**- **(जो)** जो **(दंसणणाणपहाणे)** दर्शनाचार और ज्ञानाचार है प्रधान जिनके ऐसे **(वीरियचारित्तवरतवायारे)** वीर्याचार, चारित्राचार और उत्तम तपाचार में **(जो)** जो **(अप्पं)** अपने को **(च)** और **(परं)** दूसरों को **(जुंजइ)** लगाते हैं **(सो)** वे **(मुणी)** मुनि **(आयरिओ)** आचार्य परमेष्ठी हैं, वे आचार्य परमेष्ठी भी **(झेओ)** ध्यान करने योग्य है।

**अर्थ**- दर्शन, ज्ञान, आचार हैं प्रधान जिनके ऐसे वीर्य, चारित्र और तपश्चरण इन पाँच आचारों को जो स्वयं पालते हैं तथा दूसरों से पालन कराते हैं, उन्हें आचार्य परमेष्ठी कहते हैं। उनका भी ध्यान करना चाहिए।

## उपाध्याय परमेष्ठी का लक्षण

**जो रयणत्तय-जुत्तो, णिच्चं धम्मो-वए-सणे णिरदो।**
**सो उवझाओ अप्पा, जदि-वर-वसहो णमो तस्स।।53।।**

**अन्वयार्थ**- **(जो)** जो **(रयणत्तयजुत्तो)** रत्नत्रय सहित और **(णिच्चं)** सदा **(धम्मोवएसणे)** धर्मोपदेश देने में **(णिरदो)** तत्पर होता है **(सो)** वह **(जदिवरवसहो)** प्रधान मुनियों में प्रमुख **(अप्पा)** आत्मा **(उवझाओ)** उपाध्याय परमेष्ठी है **(तस्स)** उन उपाध्याय परमेष्ठी के लिए **(णमो)** नमस्कार हो।

**अर्थ**- जो रत्नात्रय सहित और सदा धर्मोपदेश देने में तत्पर होते हैं वह प्रधान मुनियों में प्रमुख आत्मा उपाध्याय परमेष्ठी है उन उपाध्याय परमेष्ठी के लिए नमस्कार हो।

## साधु परमेष्ठी का लक्षण

**दंसण-णाण-समग्गं, मग्गं मोक्खस्स जो हु चारित्तं।**
**साधयदि णिच्च-सुद्धं, साहू सो मुणी णमो तस्स।।54।।**

**अन्वयार्थ**- **(जो)** जो **(मुणी)** मुनि **(मोक्खस्स)** मोक्ष के **(मग्गं)** मार्गस्वरूप **(दंसणणाणसमग्गं)** दर्शन और ज्ञान सहित **(णिच्चसुद्धं)** सदा शुद्ध **(चारित्तं)** चारित्र को **(साधयदि)** साधता है **(सो)** वह **(साहू)** साधु परमेष्ठी है **(तस्स)** उन साधु के लिए **(णमो)** नमस्कार हो।

**अर्थ**- जो मुनि मोक्ष के मार्गस्वरूप दर्शन और ज्ञान सहित सदा शुद्ध चारित्र को साधता है, वह साधु परमेष्ठी है, उन साधु परमेष्ठी के लिए नमस्कार हो।

## निश्चयध्यान का वर्णन

**जं किंचि वि चिंतंतो, णिरीह-वित्ती हवे जदा साहू।**
**लद्धूण य एयत्तं, तदा हु तं तस्स णिच्छयं झाणं।।55।।**

**अन्वयार्थ**- **(जदा)** जब **(साहू)** साधु **(एयत्तं)** एकाग्रता को **(लद्धूणय)** प्राप्त होकर **(जं किंचि वि)** जो कुछ भी **(चिंतंतो)** चिन्तवन करता हुआ **(णिरीहवित्ती)** इच्छा रहित **(हवे)** होता है **(तदा)** उस समय **(हु)** ही **(तस्स)** उस साधु का **(तं)** वह **(णिच्छयं)** निश्चय **(झाणं)** ध्यान होता हैं।

**अर्थ**- जब साधु एकाग्रता को प्राप्त होकर जो कुछ भी चिन्तवन करता हुआ इच्छा रहित होता है उस समय ही उस साधु का वह निश्चय ध्यान होता हैं।

## परमध्यान का लक्षण

**मा चिट्ठह मा जंपह, मा चिंतह किंवि जेण होइ थिरो।**
**अप्पा अप्पम्मि रओ, इणमेव परं हवे झाणं।।56।।**

**अन्वयार्थ**- **(किंवि)** कुछ भी **(मा चिट्ठह)** चेष्टा मत करो **(मा जंपह)** मत बोलो **(मा चिंतह)** मत विचारो **(जेण)** जिससे **(अप्पा)** आत्म **(अप्पम्मि)** आत्मा में **(रओ)** लीन होकर **(थिरो)** स्थिर **(होइ)** होता है **(इणमेव)** यह ही **(परं)** उत्कृष्ट **(झाणं)** ध्यान **(हवे)** हैं।

**अर्थ**- कुछ भी चेष्टा मत करो मत बोलो, मत विचारो जिससे आत्मा में लीन होकर स्थिर होता है यह ही उत्कृष्ट ध्यान है।

## ध्यान का उपाय

**तव-सुद-वदवं चेदा, झाण-रह-धुरंधरो हवे जम्हा।**
**तम्हा तत्तिय-णिरदा, तल्लद्धीए सदा होई।।57।।**

**अन्वयार्थ**- **(जम्हा)** जिस कारण से **(तवसुदवदवं)** तप, शास्त्र और व्रतों को धारण करने वाली **(चेदा)** आत्मा **(झाणरहधुरंधरो)** ध्यानरूपी रथ को ढोने वाला **(हवे)** होता है **(तम्हा)** इसलिए **(तल्लद्धीए)** उस ध्यान की प्राप्ति के लिए **(सदा)** हमेशा **(तत्तियणिरदा)** उन तीनों में लीन **(होई)** होओ।

**अर्थ**- जिस कारण से तप, शास्त्र और व्रतों को धारण करने वाली आत्मा ध्यानरूपी रथ को ढोने वाला होता है इसलिए उस ध्यान की प्राप्ति के लिए हमेशा उन तीनों में लीन होओ।

## ग्रन्थकार की लघुता

**दव्व-संगह-मिणं मुणि-णाहा, दोस-संचय-चुदा सुद-पुण्णा।**
**सोधयंतु तणु-सुत्तधरेण, णेमि-चंद-मुणिणा-भणियं जं।।58।।**

**अन्वयार्थ**- **(तणुसुत्तधरेण)** अल्पज्ञानी **(णेमिचंदमुणिणा)** मुझ नेमिचन्द मुनि ने **(जं)** जो **(इणं)** यह **(दव्वसंग्रह)** द्रव्यसंग्रह **(भणियं)** कहा है इसको **(दोससंचयचुदा)** रागादि तथा संशयादि दोषरहित **(सुदपुण्णा)** द्रव्य श्रुत तथा भावश्रुत के ज्ञाता **(मुणिणाहा)** प्रधानमुनि **(सोधयंतु)** संशोधन करें।

**अर्थ**- अल्पज्ञानी मुझ नेमिचन्द मुनि ने जो यह द्रव्यसंग्रह कहा है इसको रागादि तथा संशयादि दोषरहित द्रव्य श्रुत तथा भावश्रुत के ज्ञाता प्रधानमुनि संशोधन करें।

* * *

## उपसर्ग विजेता परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 विराग सागरजी महाराज द्वारा लिखित, सम्पादित एवं संकलित तथा श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित प्रवचन सत् साहित्य

| सं. | नाम | मूल्य |
|---|---|---|
| 1. | संस्कृत सर्वोदया टीका (वारसाणुवेक्खा) भाग 1-2 | 150 |
| 2. | संस्कृत रत्नत्रयवर्धिनी टीका (रयणसार) भाग 1-2 | 185 |
| 3. | संस्कृत श्रमणप्रबोधनी टीका (पाहुडद्वय) | |
| | **(शोधपूर्ण साहित्य)** | |
| 4. | शुद्धोपयोग | 40 |
| 5. | सम्यग्दर्शन | 35 |
| 6. | आगम चक्खू साहू | 25 |
| 7. | सल्लेखना से समाधि | 30 |
| 8. | संत साधना के प्रेरक प्रसंग | 20 |
| 9. | परम दिगम्बर जैन मुनि (हिन्दी, मराठी, कन्नड़, तमिल, अंग्रेजी) | 45 |
| 10. | सर्वोदयी दिगम्बर जैन धर्म | 30 |
| 11. | तीर्थंकर दिव्य दर्शन | 30 |
| 12. | तीर्थंकर दर्शन | |
| 13. | व्यसन विचार (ग्रंथ) | 200 |
| 14. | फूल नहीं, हैं काँटे | |
| 15. | संस्कार सुरभि (हिन्दी, गुजराती, मराठी) | 18 |
| 16. | जिनेन्द्र दर्शन, जिनेन्द्र पूजन | 10 |
| 17. | आध्यात्मिक शंका-समाधान | 30 |
| 18. | आध्यात्मिक तत्त्व-चर्चा | 40 |
| | **(चिंतन साहित्य)** | |
| 19. | चैतन्य चिन्तन भाग-1 | 15 |
| 20. | चैतन्य चिन्तन भाग-2 | 15 |
| 21. | चैतन्य चिन्तन भाग-3 | 15 |
| | **(बालोपयोगी साहित्य)** | |
| 22. | बाल विज्ञान भाग-1 (हिन्दी, इंग्लिश, मराठी, कन्नड़) | 10 |
| 23. | बाल विज्ञान भाग-2 (हिन्दी, इंग्लिश) | 10 |
| 24. | बाल विज्ञान भाग-3 | 10 |
| 25. | बाल विज्ञान भाग-4 | 10 |
| 26. | कर्म विज्ञान भाग-1 (हिन्दी, इंग्लिश) | 10 |
| 27. | कर्म विज्ञान भाग-2 | 10 |
| 28. | कर्म विज्ञान भाग-3 | 10 |
| | **(कथा साहित्य)** | |
| 29. | नैतिक कथा मंजूषा भाग-1 | 30 |
| 30. | नैतिक कथा मंजूषा भाग-2 | 30 |
| | **(अनुवाद साहित्य)** | |
| 31. | वारसाणुवेक्खा | |
| 32. | परमरत्नार्चना संग्रह | 20 |
| 33. | सामायिक पाठ (हिन्दी, गुजराती) | 10 |
| | **(पद्य साहित्य)** | |
| 34. | भावों के विशुद्ध क्षण | 15 |
| 35. | मुक्ताञ्जलि भाग-1 | 15 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 36. | मुक्ताञ्जलि भाग-2 | 15 | 37. | नव देवता निर्वाण क्षेत्र पूजा | |

**(संकलित/सम्पादित साहित्य)**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 38. | साधना से समाधि | 20 | 39. | विमल नित्य पाठावलि | 25 |
| 40. | आराधना | 35 | 41. | सुभाषित संग्रह | 40 |
| 42. | आप्त अर्चना | | 43. | मानतुंग की अमर भक्ति (सचित्र भक्तामर) | 65 |
| 44. | साधना | 10 | 45. | अनुप्रेक्षा | 10 |
| 46. | जिनागम दीप | 251 | 47. | सम्मेद शिखर विधान | |
| 48. | चारित्र शुद्धि व्रत | 25 | 49. | करुणामूर्ति सन्त | 100 |
| 50. | तपस्वी सम्राट | 10 | 51. | यज्ञोपवीत विधि | |
| 52. | साधना के सोपान | | 53. | पदम् पुराण प्रश्नोत्तरी | 100 |
| 54. | स्तोत्र भारती | 51 | | | |

**(एकांकी/नाटक साहित्य)**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 55. | सत्यमित्र-सत्यदृष्टि | | 56. | प्रद्युम्न हरण | |

**(पूज्य आचार्य श्री पर आधारित साहित्य)**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 57. | विरागाभिवंदन अभिनंदन | | 58. | निस्पृही संत भाग-1-2 | 60 |
| 59. | विराग सेतु (महाकाव्य) (हिन्दी, गुजराती, प्राकृत) भाग-1 | | | | 100 |
| 60. | विराग सेतु (महाकाव्य) भाग-2 | | | | |
| 61. | संत काव्य की परम्परा में आचार्य विरागसागर | | | | 65 |
| 62. | कमल से महाकमल | | | | |
| 63. | घटनायें ये जीवन की | 80 | 64. | दिगम्बरत्व के चितेरे | 150 |
| 65. | विराग सिंधु की उर्मियाँ | 15 | 66. | विराग वाटिका | 41 |
| 67. | भक्ति की झंकार | 25 | 68. | विराग काव्यांजलि | |
| 69. | धर्म पीयूष | 30 | 70. | ऐसे चलो मिलेगी राह | 40 |
| 71. | दूर नहीं है मंजिल | 30 | 72. | उड़ रे पंछी | 10 |
| 73. | तीर्थंकर वर्धमान | 15 | 74. | पहले देव-पूजा फिर काम दूजा | 25 |
| 75. | तीर्थंकर ऐसे बनो | 60 | 76. | तट की ओर | 10 |
| 77. | सिर्फ दो प्रवचन | 10 | 78. | इष्टोपदेश (प्रवचन) | |
| 79. | मानतुंग की अमरभक्ति | 150 | 80. | कल्याणक महोत्सव | 20 |
| 81. | दान तीर्थ | 20 | 82. | धर्म के दश सोपान | 20 |
| 83. | जीवों पर दया करो, शुद्ध शाकाहार करो | | | 20 | |
| 84. | बुराईयाँ ही जेल, अच्छाईयाँ ही मुक्ति | | | 10 | |
| 85. | प्रवचन वर्षा | 25 | 86. | कर्तव्यमेव कर्तव्यं | 25 |
| 87. | श्रद्धा प्रसून | 25 | 88. | मोक्ष की राह | 25 |
| 89. | विरागामृत-1 | 30 | 90. | विरागामृत-2 | |

100. समाधि तंत्र (प्रवचन)
101. समयोचित शिक्षायें भाग-1 20
102. समयोचित शिक्षायें भाग-2 20
103. समयोचित शिक्षायें भाग-3 20
104. विराग मंथन (हिन्दी, अंग्रेजी) 5
105. रजत पुष्प 51
106. कहानी सबसे सुहानी 30
107. अक्षय निधि (हिन्दी, अंग्रेजी) 10
108. संस्कार की लहरें 20
109. चलो चलें प्रभु दर्शन को 30
110. आध्यात्मिक धर्म प्रवचन 30
111. घर-घर की कहानी 30
112. वारसाणुवेक्खा प्रवचन 125
113. पर्यूषण निधि 15
114. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 1. धर्मोपदेशामृतम् 200
115. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 2. दानोपदेशम् 40
116. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 3. अनित्य पञ्चाशत् 50
117. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 4-5. एकत्व सप्तति तथा यतिभावनाष्टकम् 85
118. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 6. उपासक संस्कार 60
119. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 7. देशव्रतोद्योतनम् 60
120. पद्मनंदि पंचविंशतिः अधिकार 8-9 सिद्धस्तुति एवं आलोचना 85
121. मेरी भावना
122. आचार्य विराग सागर साहित्य दर्शन 10
123. मेरी भावना प्रवचन
124. फॉर यूथ प्रोग्रेस 22
125. रत्नकरण्डक श्रावकाचार प्रवचन भाग-1 100
126. सामायिक पाठ प्रवचन 85
127. विराग संध्या 20
128. विराग अर्चना 40
129. स्वर्ग पुष्प 30
130. षट्लेश्या प्रवचन
131. ऐसे बनायें घर को स्वर्ग
132. क्यूँ इतना अभिमान है.... 30
133. सिद्धों का खजाना 30
134. अपने नैतिक कर्त्तव्य 30
135. श्रुतज्ञानवर्धक विधान 20

## Video D.V.D

1. आचार्य पदारोहण द्रोणगिरि
2. राष्ट्रीय रजत मुनि दीक्षा जयन्ती, उद्गाँव
3. उपसर्ग पर उत्कर्ष की यात्रा
4. आर्यिका विशाान्तश्री माताजी, समाधि
5. व्यसन मुक्ति शाकाहार अभियान
6. लोक और मध्यलोक
7. ज्योतिर्लोक और चन्द्रयात्रा
8. जेल प्रवचन
9. स्कूल प्रवचन
10. शाकाहार रैली
11. अहिंसा रैली
12. न्यायालय में प्रवचन
13. 25 दीक्षायें- श्रवणबेलगोला
14. 11 दीक्षायें-गाँधीनगर
15. 8 दीक्षायें-गिरनारजी
16. 11 दीक्षायें-किशनगढ़

17. 26 दीक्षायें-उदयपुर 18. 25 दीक्षायें-जयपुर
19. 8 दीक्षायें-इन्दौर 20. स्वर्णिम जन्म जयन्ती
21. सिद्धांत एवं आध्यात्मिक प्रवचन (वारसाणुवेक्खा, सामायिक पाठ, तत्त्वार्थ सूत्र, पद्मनंदि पंचविंशतिका भाग-1-14) 22. मातृभक्ति
23. देश के नाम कलंक बूचड़खाने

## Audio DVD

1. श्यामा के लाल
2. साधना के सरताज
3. गुरुवर का जयकारा
4. प्रवचन वर्षा (दशधर्म, सोलहकारण)
5. श्री विराग सागर नमोऽस्तु ते
6. करें गुरु भक्ति
7. चलें गुरुवर के द्वार
8. गीत गुरु के गायेंगे
9. जियो हजारों साल गुरुवर
10. मेरे मन वीणा के तारे
11. विराग स्वर्णोत्सव
12. रजतवर्ष मुनिदीक्षा का
13. आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज पूजा
14. हे सन्मति-सन्मति दो
15. स्वर्णिम जयन्ती याद रहेगी
16. प्रथम सूरि बुंदेलखण्ड के
17. गुरु नाम की धूम मची है

## साहित्य प्राप्ति स्थान

* **श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ** चैत्यालय मंदिर, बताशा बाजार, भिण्ड (म.प्र.) सम्पर्क सूत्र : पं. वीरेन्द्र जैन (मो. 9754803220) * **आचार्य श्री विराग सागर विद्यापीठ (बी.एड.कॉलेज)** पुष्प विहार कॉलोनी, बीना-470113, जिला-सागर (म.प्र.) * **विराग फाउण्डेशन,** द्वारा-श्री अरुण कोटड़िया, II-A विक्रम नगर सोसायटी, उस्मानपुरा, अहमदाबाद-380013 (गुजरात) * **श्री भूपेन्द्र शांतिलाल शाह,** 12-B, वर्धमान सोसायटी, डेरी रोड, मेहसाना-2 (गुजरात) सम्पर्क सूत्र- श्री भूपेन्द्र शाह (मो. 9898494914, 9829452020) * **विराग महिला मंच,** बोरीवली, मुम्बई (महा.) * **श्रीमती पुष्पा पाटनी,** 574, शांतिनगर, जैन मंदिर के सामने, गोपालपुर वायपास, जयपुर (राज.) मो. 09460765050* **श्री मनीष पाटनी,** नया बाजार, 54, धर्मकांटा के पास, अजमेर (राज.) मो. 09414002306* **श्री तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, विष्णु व्यास** मोहता चौक, बीकानेर (राज.) मो. 9314962475 * **राष्ट्रीय विराग युवा मंच, अध्यक्ष – श्री राजेश जैन** अंजनी नगर, इन्दौर मो. 09425316970* **राष्ट्रीय युवा मंच अध्यक्ष – श्री पंकज पाटनी** 72, विंध्याचल नगर, एरोड्रम रोड, इन्दौर मो. 09425476665 * **डॉ. महेन्द्र कुमार जैन 'मनुज'** 22/2, रामगंज, जिन्सी, इन्दौर-7 मो. 09826091247